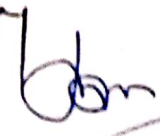


13/12/2018

शंकरदास

45-712

पत्रावली भूत। वाची ला का-
 वाय विद्रो क्तेन वा प्राच्यपठ
 पेश क्तेन च पत्रावली सिद्धे
 से तलव दाय्य पेश की उरु।
 वाची ला का निवेदन विद्या जमा
 विन स्व पत्रावली के अल्प सामाजिक
 संग्रह समझता है जो से
 प्रकृष्ट मे अब कोत्र कर्षवाही नही
 चाहे है तथा वाय विद्रो क्तेन
 चाहे है। वाची की पहचान कर्षवा
 की प्रवृत्त जोशी ला का की उरु।
 अतः वाची का वाय विद्रो क्तेन च
 प्राच्यपठ स्विकार विद्या जात है
 तथा प्रकृष्ट मे इसी स्तर पर
 कर्षवाही समाप्त भी जाती है।
 पत्रावली बाद सामील तर्कमील फल
 युक्त दाय्य नही से कम है।


 13.12.18

राज्य अधिकारी
 विभाग, विलोडग

